कोलाबा (मुम्बई)। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डॉ.गिरीश पटेल, ब्र.कु.गायत्री तथा अन्य।

भैरहवा (नेपाल)। नेपाल के वितमंत्री वर्षमान पुन अनन्त को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शांति तथा अन्य।

थाना। ब्र.कु.लतिका को 'स्मृति चिन्ह' भेंट कर सम्मानित करते हुए मारवाड़ी समाज के अध्यक्षा सुमन अग्रवाल तथा अन्य।

येवला (कोपरगांव)। ब्र.कु.नीता को 'आदर्श आध्यात्मिक संस्था' का पुरस्कार भेंट कर सम्मानित करते हुए महाराष्ट्र के पर्यटन मंत्री छगनराव भुजबल तथा अन्य।

परभणी। ब्र.कु.उषा को 'सिटीजन अवार्ड' से सम्मानित करते हुए बहन विशाला पट्टनम।

हांसी। ब्र.कु.लक्ष्मी को शाल एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित करते हुए 'हरियाणा अणुव्रत समिति' अध्यक्ष प्रदीप जैन, महांमत्री लाजपतराय तथा अन्य।

बीती हुई बातों को मन पर हावी न होने दें

प्रश्न:- आज गुस्सा करना और भी जायज हो जायेगा?

उत्तर:- तो समझ लो कि मैं गुस्सा करने का संस्कार बना रही हूँ। थॉट से फीलिंग, फीलिंग से एक्शन, एक्शन से हैबिट बनती है। अब यहां प्रश्न उठता है कि यह हमारी आदत क्यों बन रही है? क्योंकि हमने कहीं भी रूक कर अपने थॉट को चेक नहीं किया और उसे परिवर्तन नहीं किया। आप अपनी डायरी में यह लिखकर रख दो कि 10 मिनट सुबह का समय और 10 मिनट शाम का समय हम अपने साथ व्यतीत करेंगे। इससे आपका बहुत सारा कार्य हल्का हो जायेगा। नहीं तो आप साधारण तरीके से ही चलते रहेंगे। यदि हम आज की दिनचर्या को अपने मन में दुहराते भी हैं तो उसमें भी हम परिस्थिति और दूसरें लोगों को ही ज्यादा देखते हैं, जो कि मेरे कंट्रोल में नहीं हैं। मुझे सिर्फ ये देखना है कि उस परिस्थिति में मैं किस प्रकार से व्यवहार कर सकती थी। मैं क्यों दु:खी हुई, क्योंकि मैंने यहां पर मैं गुस्सा कर दिया, यदि मैं गुस्सा नहीं भी करती तो भी काम चल सकता था इसलिए हमें अपने प्रोग्राम की बार-बार प्रैक्टिस करनी है। प्रोग्रामिंग करने के लिए हमें यह ध्यान रखना पड़ता है कि हमें परिस्थिति के बारे में चिंतन नहीं करना है कि औरों ने क्या बोला या उसने क्या किया, उसके बारे में चिंतन नहीं करना है। उस परिस्थिति में मैंने क्या रेसपांस किया और मैं क्या रेसपांस कर सकती थी, हमें ये देखना है। फिर आप सोने के लिए चले जायें, ये धीरे-धीरे आपके मन से निकल जायेगा।

यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो हम दु:ख की फीलिंग करते-करते सो जायेंगे और जब हम अगली सुबह उठेंगे तो फिर वही दर्द, वही दृश्य याद आने लगेगा। जब हम उस व्यक्ति से दुबारा मिलेंगे तो वह दर्द पहले से ही उस व्यक्ति के प्रति क्रियेट हो जायेगा।

प्रश्न:- आज हर कोई बात कर रहा है, 'थॉट पावर' की। और आपने हमें जो समाधान दिये हैं वो यही है कि अगर कोई भी परिस्थिति आती है, चाहे कुछ भी है तो हम समय-समय पर सही और अच्छी पुस्तके पढ़ें।

उत्तर:- वो भी हर रोज सुबह और रात्रि को सोते समय।

प्रश्न:- पुस्तक में से कुछ पढ़ें जरूर।

उत्तर:- हम कुछ पढ़ें, कुछ सुनें, नहीं तो हम निगेटिव थॉट्स के बहाव में बहते चले जायेंगे।

प्रश्न:- निगेटिव थॉट्स तो हमें मांगना भी नहीं पड़ता है, वो तो ऑलरेडी मिल रही होती है ऑफिस पहुंचते हैं, चाहे जहां भी पहुंचते हैं, वो जानकारी वैसे ही उपलब्ध हो जाती है।

उत्तर:- उदाहरण के लिए हम इस प्रोग्राम को ही लेते हैं। इस प्रोग्राम के लिए बहुत सारे भाई-बहनें अपना अनुभव भेजते हैं कि उन्होंने क्या किया है। उन्होंने सिर्फ ये किया है कि वे हर रोज इस प्रोग्राम को देख रहे हैं। इसके लिए कुछ करना नहीं है, सिर्फ अपने लिए समय निकालना है और यह समय निकालना बहुत ही जरूरी है। अपने लिए वो आधा घंटा निश्चित किया कि मुझे इस समय पर ये प्रोग्राम देखना है। उसी समय पर टेलीविजन पर तो बहुत सारे कार्यक्रम आते हैं, लेकिन लोगों ने इस प्रोग्राम को देखना पसंद किया। मैजोरिटी लोग जो मिलते हैं, अगर उनसे पूछा जाये तो वो खुद ही बोलते हैं - एक चीज जो हुई इस प्रोग्राम को देखकर के कि मेरा सोचने का ढंग बदल गया। हर कोई कहता है कि मेरा सोचने का ढंग बदल गया। रोज-रोज जब सुना, अपने बारे में वो सुना, तो फिर इसका प्रभाव पड़ा, जो कि इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। (क्रमश:)

खुशनुमा जीवन जीने की कला

(अवेकनिंग विथ ब्रह्माकुमारीज से)

-ब्र.कु.शिवानी

लिख रहा पुरुष .... पृष्ठ 2 का शेष

निराकारी एवं शरीर रहित हैं। साधारण मनुष्यों सदृश्य वे माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते परंतु पुरानी पतित, तमोप्रधान कलियुगी सृष्टि के उद्धार हेतु उन्हें मनुष्य तन का आधार लेना पड़ता है और वह जिस तन का आधार लेते हैं वह 'प्रजापिता ब्रह्मा' कहलाता है। ऐसा नहीं है कि परमात्मा जिस तन का आधार चाहें ले लें और वह तन ब्रह्मा कहलाने लगे। ब्रह्मा-तन पूर्व निश्चित है। संगमयुग पर ब्रह्मा तनधारी यह आत्मा सतयुग के सर्वप्रथम विश्व महाराजन् श्री नारायण की ही आत्मा है जो चारों युगों के 84 जन्मों के चक्र में आते-आते विस्मृति को प्राप्त हो जाती है। परमात्मा इसी आत्मा के अंतिम चौरासिवें जन्म वाले तन में अवतरित होकर इस ब्रह्मा सहित सभी जीवात्माओं की जीवन कहानी बताते हैं, मानव इतिहास की व्याख्या करते हैं।

सृष्टि की आदि में सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री नारायण और श्री लक्ष्मी का संपूर्ण भूमंडल पर अटल, अखण्ड और निर्विघ्न राज्य होता है। यथा राजा रानी तथा प्रजा सभी दैवीगुण सम्पन्न होते हैं। वहां अन्याय, अत्याचार, अधर्म, अपवित्रता का चिन्ह मात्र भी नहीं होता। शेर और बकरी एक घाट पर वहां पानी पीते हैं तथा घी-दूध की नदियां बहती है। दूसरा धर्म या राज्य नहीं होता। 1250 वर्ष की आयु वाले इस युग को सतयुग कहा जाता है। त्रेतायुग में 14 कला सम्पन्न चंद्रवंशी क्षत्रिय देवी-देवता श्रीराम और श्रीसीता का राज्य होता है। रावण, कुम्भकरणादि असुर, दु:ख देने वाले मनुष्य अथवा वस्तुएं इस युग में भी नहीं होती। त्रेतायुग के समाप्त होते-होते 2500 वर्ष अर्थात् आधा कल्प बीत जाता है। इन युगों में अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष सब सिद्ध रहता है अर्थात् इन देवी-देवताओं का जीवन धर्म एवं कर्मयुक्त होता है। वहां धनाभाव नहीं, कोई कामना शेष नहीं और जीवन में रहते सारे दु:खों से मुक्ति अर्थात् जीवनमुक्ति की अवस्था होती है। धन-धान्य एवं मणि-मुक्ताओं से परिपूर्ण इन दोनों युगों को स्वर्ग अथवा स्वर्णकाल कहा जाता है। यही वह उदीयमान स्वर्णिम काल है जिसका इतिहास परमात्मा ब्रह्मा द्वारा लिखवाते हैं। यही ब्रह्मा सो पुन: सतयुग में जाकर श्रीनारायण बनते हैं। इस प्रकार कल्प के आदि और अंत में ब्रह्मा की आत्मा का ही मुख्य और विशेष पार्ट है। वर्तमान समय ही वह समय है जब ब्रह्मा द्वारा पुन: स्वर्णकाल का इतिहास लिखा जा रहा है। ब्रह्मा और ब्रह्मा-वत्स श्रेष्ठ महाराजाओं की जीवन कहानी एवं राज्य के शासनकाल का होता है जो बाद में लेखनी द्वारा लिपिबद्ध किया जाता है। किन्तु, इस उदीयमान स्वर्णिम इतिहास की विशेषता यह है कि यह मनुष्य के अपने ही कर्मों की लेखनी द्वारा पूर्व जीवन में ही लिखा जाता है। तत्पश्चात्, अगले जन्म में पुरुषार्थ अनुसार नंबरवार पद की प्राप्ति होती है।

आगामी कार्यक्रम

न्यायविद प्रभाग की कॉन्फ्रेंस

न्यायविद प्रभाग की कॉन्फ्रेंस कम रिट्रीट 22 से 26 जून 2012 को ज्ञानसरोवर, माउण्ट आबू में आयोजित किया गया है। इस कॉन्फ्रेंस में हाई कोर्ट, लोअर कोर्ट के न्यायाधीश, सीनियर वकील, लॉ कॉलेज के प्रिंसीपल, चार्टड एकाउण्टेंट या जो सेल्स टैक्स या आयकर विभाग में 25 वर्षों से प्रैक्टिस कर रहे हैं, वो भाग ले सकते हैं। और अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- मोबाईल नं. - +919414154670, Email: bklata011@gmail.com